पिरामीड और ज्योतिषशास्त्र

पिरामीड एक प्रकार की ज्यामितीय आकृति है। इसमें एक ही आकार के 4 समबाहु त्रिभुज एक वर्गाकार आधार पर इस प्रकार स्थित होते हैं कि इनकी चोटी नुकीली हो जाती है। पिरामीड ग्रीक भाषा का शब्द है, जो दो शब्दों के मेल से बना है - पिरा और मीड। पिरा का मतलब अग्नि होता है और मीड का मतलब होता है मध्य आधार यानि अग्नि और धरती। इस प्रकार यह ऐसी संरचना है जो अपने मध्य आधार में अग्नि को समावेशित किये रहती है। यहां अग्नि से तात्पर्य ऊर्जा क्षेत्र से है। वातावरण से मस्तिष्क, शरीर और मन की ससंगति स्थापित करने के लिए वास्तुशास्त्र के अनुसार पिरामीड एक परिक्षीत कला है। उचित स्थान पर सक्रिय पिरामीडों को रखने भर से हम स्वास्थ्य, समृद्धि और खुशी हासिल कर सकते हैं। मकान, दुकान या फैक्ट्री को तोड़फोड़ कर वास्तु अनुरूप बनाने के मुकाबले वास्तु दोषों को दूर करने के लिए पिरामीड ज्यादा बेहतर उपाय है। पिरामीड का प्रयोग कर समृद्ध और सुरक्षित वातावरण का निर्माण किया जा सकता है।

पिरामीड का एक और उपयोग है। पिरामीड का ज्योतिषशास्त्र से भी महत्वपूर्ण संबंध है। ज्योतिषशास्त्र में हर ग्रह एक दिशा का प्रतिनिधित्व करता है और वास्तुशास्त्र तो है ही दिशाओं का शास्त्र।

पिरामीड के चार सतह, चार दिशाओं- पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण की ओर होते हैं। पिरामीड अपनी नुकीली चोटी ऊपर की ओर होने के कारण ब्रह्मांड से सकारात्मक ऊर्जा लता रहता है। पिरामीड का आधार धरती से संपर्क में रहता है। इस प्रकार पिरामीड और ज्योतिष में गहरा संबंध है। ज्योतिष में भी कई तरीके हैं जिनमें पिरामीड का उपयोग कर वांछित परिणाम हासिल किये जा सकते हैं।

हर जन्म कुंडली में कमजोरियां और ताकत होती हैं। कुछ ग्रह ताकतवर होते हैं, तो कुछ ग्रह कमजोर होते हैं। ताकतवर ग्रह जब अनुकूल होते हैं तो व्यक्ति को अच्छे परिणाम मिलते हैं, वहीं कमजोर ग्रह अनुकूल होने के बावजूद खराब परिणाम देते हैं। इसके अलावा जन्मकुंडली का हर घर जीवन के किसी न किसी हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। कोई विशेषज्ञ कुंडली का अध्ययन कर बता सकता है कि जीवन के किस हिस्से को मजबूत करना है और किस हिस्से के दोष का दूर करना है। अनुकूल परिणाम नहीं दे पा रहे ग्रहों ओर घरों का दोष दूर करने के लिए हम पिरामीड का उपयोग कर सकते हैं। पिरामीड यंत्र के उपयोग से उस विशेष भाग से व्यक्ति को वांछित परिणाम मिलेंगे।

इसी प्रकार पिरामीडों को इस प्रकार से भी सक्रिय किया जा सकता

है कि ताकतवर ग्रह भी बेहतर अनुकूल परिणाम दें। किसी कुंडली में विलासिता का ग्रह शुक्र पहले से ही मजबूत हो तो पिरामीड का उपयोग कर शुक्र को और ताकतवर बनाकर और बेहतर परिणाम पाये जा सकते हैं। इसी प्रकार अपनी सामाजिक स्थिति मजबूत करने के लिए राहू को और समृद्धि एवं ताकत के लिए केतु को पिरामीड यंत्रों द्वारा और मजबूत किया जा सकता है। इसी प्रकार आध्यात्मिक खुशी के लिए गुरू को ताकतवर बनाया जा सकता है।

किसी को स्वास्थ्य एवं जीवंतता संबंधी समस्या हो तो सक्रिय पिरामीड से सूर्य को ताकतवर बनाया जा सकता है क्योंकि स्वास्थ्य एंव जीवंतता का कारक सूर्य है। अगर किसी व्यक्ति की कुंडली में चंद्र कमजोर है तो वह व्यक्ति बड़ी जल्दी तनाव में आ जाता है ,उसे नींद भी ठीक से नहीं आती और वह अनिद्रा का शिकार हो जाता है। ऐसे में चंद्र के लिए सक्रिय किया गया पिरामीड यंत्र काफी राहत प्रदान कर सकता है।

यह भी होता है कि कुंडली में प्रतिकूल ग्रह लंबे समय तक किसी खास स्थिति मे रहकर लंबे समय तक व्यक्ति को प्रतिकूल परिणाम देते हैं। ऐसे में उपयुक्त पिरामीड यंत्र का भी लंबे समय तक प्रयोग करना पड़ता है। पिरामीडो मे सीमाहीन क्षमता होती है और उन्हें बिना बदले

हमेशा प्रयोग में लाया जा सकता है। ज्योतिष और वास्तु का विशेषज्ञ आपको बता सकता है कि किस प्रकार के पिरामीड का प्रयोग आपके लिए बेहतर होगा।

लेखक इंजीनियर हैं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम में उच्चाधिकारी रह चुके हैं। फिलहाल वे भूदोष वास्तु सलाहकार के रूप में हैदराबाद में रह रहे हैं। उनसे www.karmicvastu.com या उनके मोबाइल नम्बर 099893-00733 पर संपर्क किया जा सकता है।